णमोकार

दीप-महा-अर्चना

रचयिता

बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक

श्री जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	**णमोकार** दीप-महा-अर्चना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	द्वितीय
प्रसंग	:	21वाँ पावन वर्षायोग 2019
आवृत्ति	:	1100
लागत मूल्य	:	12/-
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना संपर्क-94251-28817
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक
सुव्रतसागर गुरु भक्त परिवार
सकल दिगम्बर जैन समाज
चंदेरी, जिला अशोकनगर (म.प्र.)

अंतर्विद्या

जिनशासन में णमोकार मंत्र का महत्व सर्वविदित है। इसकी व्याख्या करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती इसलिए जब से हमारा जन्म होता है तब से ही हमें घुट्टी के रूप में णमोकार ही दिया जाता है और दिया भी क्यों न जाये यह मंत्र इतना प्रभावशाली जो ठहरा। अनेक नामों से प्रचलित, अनेक धुनों में पढ़ने की विधा से सहित, अनेक प्रकार के पूजन विधान जाप अनुष्ठान से संपन्न इस मंत्र को स्वीकार किया जाता है। और यह सत्य ही है कि जो व्यक्ति णमोकार मंत्र जपते-जपते अपना मरण करता है उसकी सद्गति ही स्वीकार की जाती है। ऐसे अनेक उदाहरण आगम में पढ़ने में आते हैं एवं प्रत्यक्ष में दिखाई देते हैं। आज भी जब कोई कार्य करते हैं चाहे वह सांसारिक हो या धार्मिक हो तब णमोकार मंत्र से प्रारंभ करते हैं एवं इसका विशेष अनुष्ठान भी करते हैं और करना भी चाहिए। इसी भावना की पूर्ति के लिए णमोकार दीप महा-अर्चना की संयोजना की गई है क्योंकि दीप आरती करने से बहुत सारी विघ्न बाधायें जहाँ एक तरफ नष्ट होती हैं वहीं दूसरी तरफ सकारात्मक ऊर्जा का संचार अतिशय रूप में होना प्रारंभ हो जाता है। इस दीप अर्चना में णमोकार मंत्र के सभी महा प्रभावशाली ३५ बीजाक्षरों के माध्यम पंच परमेष्ठी की अर्चना की गई है। प्रत्येक बीजाक्षर अपने आप में द्वादशांग से परिपूर्ण है अतः प्रत्येक मंत्र विघ्न विनाशक ही नहीं अतिशयकारी, कल्याणकारी एवं सुखदायक और संपूर्ण है। अपने

जीवन में, परिवार में, समाज में, देश में सुख-शांति हो और लोग धर्म भावना से जुड़े रहें इसी भावना से ३५ दीपों के द्वारा सुबह-दोपहर-शाम किसी भी बेला में णमोकार महा-अर्चना करके धर्म लाभ लें एवं अपना जीवन सुखी बनायें। सभी भक्तगण अपने सांसारिक जीवन को धार्मिक बनाते हुये प्रसन्न रहें इसी मंगल भावना के साथ...

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥

-मुनि सुव्रतसागर जी

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पञ्च णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।

जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

मंगलाचरण

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(विष्णु)

श्री अरिहंत सिद्ध आचारज, उपाध्याय साधु।
पूज्य पंचपरमेष्ठी भगवन, आतम के स्वादु॥
महामंत्र से आत्म मंत्र की, हो संपद आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥१॥

ऐसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं॥

पाँच रूप यह नमस्कार है, सभी पाप हर्त्ता।
सब मंगल में पहला मंगल, सुख-शांति कर्ता॥
णमोकार जप णमोकार में, शामिल हों आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥२॥

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं केवलि पण्णत्तं धम्मं मंगलं।

चार तरह के मंगल जिसमें, हैं अरिहंत प्रथम।
सिद्ध दूसरे साधु तीसरे, धर्म रहा अंतिम॥
हरे अमंगल करके मंगल, भरता सुख आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥३॥

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि पण्णत्तं धम्मं लोगुत्तमो।

चार तरह के उत्तम जिसमें, पहले अरिहंता।
सिद्ध दूसरे साधु तीसरे, धर्म रहा अंता॥
पातक पतन अनुत्तम हर्त्ता, पूज्य करे आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥४॥

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

चार तरह की शरणा पायें, अरिहंता पहली।
सिद्ध दूसरी साधु तीसरी, अंतिम धर्म भली॥
आत्म शरण को पाकर हम भी, शुद्ध बनें आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥५॥
णमोकार का जो आश्रय ले, ऋद्धि-सिद्धि पाये।
विघ्न कष्ट भय कर्म दूर कर, आतम झलकाये॥
पाठ भजन जप अनुष्ठान व्रत, मुक्ती दे आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥६॥

करें मंगलाचरण इसी से, जीवन का अपने।
तो जीवन में कष्ट न आयें, पूरे हों सपने॥
अंत समाधिमरण हो मंगल, 'सुव्रत'-मय आहा।
ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमो नमः स्वाहा॥७॥

(दोहा)

णमोकार नवकार है, महामंत्र सुखकार।
णमो-णमो की जाप जप, हो नमोऽस्तु भव पार॥

===

जैन धर्म तो णमोकार मंत्र से शुरु हो, करो।	णमोकार से बड़ा मंत्र विश्व में कोई नहीं है।	णमोकार तो सभी मंत्रों का जन्म-दाता मंत्र है।

दीप-अर्चना प्रारंभ

१.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(नमनरूप) (ज्ञानोदय+हाकलिका)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
महामंत्र सम मंत्र नहीं,
पुण्य प्रदाता तंत्र नहीं।
चौरासी लख मंत्रों का,
जनक यही हर यंत्रों का॥
प्रथम देव अरिहंत नमन,
सिद्धाचार्य नमन वंदन।
उपाध्याय गुरु साधु नमन,
परमेष्ठी का अभिनंदन॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

ण बीजाक्षर जाप से, रोग शोक ना पाएं।
नमोऽस्तु कर अरिहंत को, मंगल-मंगल गाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं नमनरूप ण बीजाक्षर संयुक्त श्री अरिहंत परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(अतिशयकारी)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
जिसने मंत्र जपा साँचा,
उसका जग ने यश वाँचा।
दे सौभाग्य हिमालय को,
णमोकार की जय-जय हो॥
सम्यक् अतिशयकारी है,
इसकी महिमा न्यारी है।
अतः सभी पर भारी है,
इसको धोक हमारी है॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

मो बीजाक्षर जाप से, राग-द्वेष नश जाएं।
नमोऽस्तु कर अरिहंत को, कार्य सफल हो जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं अतिशयकारी मो बीजाक्षर संयुक्त श्री अरिहंत परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

३.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(सुख प्रदाता)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
अनादिकाल से आया है,
अनादिनिधन कहलाया है।
किसने इसे बनाया है,
पता नहीं चल पाया है॥
जो अनादि आतम देता,
खुद में शामिल कर लेता।
अनंतसुख की खान रहा,
अपना तो भगवान रहा॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

अ बीजाक्षर जाप से, समवसरण पा जाएं।
नमोऽस्तु कर अरिहंत को, सदाचार हो जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखप्रदाता अ बीजाक्षर संयुक्त श्री अरिहंत परमेष्ठिने दीप-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

४.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(अपराजित)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
अनुष्ठान इसका करके,
जाप ध्यान चिंतन करके।
समय नशें दुर्बलता के,
बनते योग सफलता के॥
इतनी शक्ति प्राप्त होती,
जय-जयकार सदा होती।
अपराजित सो इसे कहा,
इसके जैसा कोई कहाँ॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

रि बीजाक्षर जाप से, अजर-अमर हो जाएं।
नमोऽस्तु कर अरिहंत को, ऋद्धि-सिद्धि हो जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं अपराजित रि बीजाक्षर संयुक्त श्री अरिहंत परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

५.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(सद्गति दायक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
पाँच पदों के आश्रय से,
परमेष्ठी के संश्रय से।
जिनशासन की गूँज करे,
इसकी महिमा खूब रहे॥
पंच परावर्तन हरके,
पंचम् ज्ञान दान करके।
पंचम गति दे सिद्ध करे,
भक्तों को समृद्ध करे॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

हं बीजाक्षर जाप से, कर्म नष्ट हो जाएं।
नमोऽस्तु कर अरिहंत को, विजय प्राप्त हो जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं सद्गति दायक हं बीजाक्षर संयुक्त श्री अरिहंत परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

६.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(सम्मोहक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
सबका मन यह मोह रहा,
भक्तों को सम्मोह रहा।
इसका रूप निराला है,
करवाता जयमाला है॥
मोहकर्म का हर्त्ता है,
सुख-शांति-यश कर्त्ता है।
सो सम्मोहन मंत्र रहा,
कलशारोहण तंत्र रहा॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

ता बीजाक्षर जाप से, कभी न गिरने पाएं।
नमोऽस्तु कर अरिहंत को, भव समुद्र तिर जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मोहक ता बीजाक्षर संयुक्त श्री अरिहंत परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

७.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(उच्चाटन नाशक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
संकट विघ्न अमंगल को,
कष्ट रोग के जंगल को।
हरे विपत्ति दुख दल-दल,
इससे सबका हो मंगल॥
यह अपशकुन हरे सारे,
शुभ मुहूर्त करता प्यारे।
सो उच्चाटन मंत्र रहा,
संत समागम पंथ रहा॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

णं बीजाक्षर जाप से, कभी न डरने पाएं।
नमोऽस्तु कर अरिहंत को, ग्रह-भय-भूत नशाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं उच्चाटन नाशक णं बीजाक्षर संयुक्त श्री अरिहंत परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

८.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(मनोकामना पूरक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
मनोकामना कैसी हो,
ऐसी वैसी जैसी हो।
भक्ति भाव से कर लेना,
णमोकार बस पढ़ लेना॥
मनाकामना पूर्ण करे,
धर्मध्यान संपूर्ण करे।
अतः मंत्र संपूरक है,
मनोकामना पूरक है॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

ण बीजाक्षर पूज के, सारे दोष नशाएं।
नमोऽस्तु कर प्रभु सिद्ध को, नग्न रूप पा जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं मनोकामना पूरक ण बीजाक्षर संयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

९.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(सर्वसिद्धि दायक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
चाहे हों संसारी की,
चाहे हों अनगारी की।
सर्व सिद्धियाँ सिद्ध करे,
सचमुच जगत प्रसिद्ध करे॥
सर्व सिद्धदायक है ये,
पद पूजा लायक है ये।
रामचन्द्र से मंत्र सुना,
जटायु पक्षी देव बना॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

मो बीजाक्षर पूज के, मोक्ष अवस्था पाएं।
नमोऽस्तु कर प्रभु सिद्ध को, रत्नत्रय पा जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसिद्धि दायक मो बीजाक्षर संयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

१०.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(मृत्युंजयी)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
अगर कभी ये हो जाये,
मरण सामने आ जाये।
पापोदय से बच पाना,
कार्य असंभव हो जाना॥
तो प्यारे मत घबराना,
णमोकार को बस ध्याना।
कर वसंतमाला की जय,
महा-महा हों मृत्युंजय॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

सिद् बीजाक्षर पूज के, सिद्धमार्ग अपनाएं।
नमोऽस्तु कर प्रभु सिद्ध को, सिद्धालय पा जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयी सिद् बीजाक्षर संयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

११.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(तारणतरण-अनर्थ निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
आ जाये उपसर्ग कभी,
कैसा भी दुख दर्द कहीं।
अनर्थ करने वाला हो,
साथ न मिलने वाला हो॥
तो मत भागो यहाँ-वहाँ,
ध्याओ तारण-तरण सदा।
पूज्य यशोधर मुनि जैसे,
दुख उपसर्ग हटें इससे॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

धा बीजाक्षर पूज के, अमर धाम पा जाएं।
नमोऽस्तु कर प्रभु सिद्ध को, नंत गुणी हो जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं तारणतरण-अनर्थ निवारक धा बीजाक्षर संयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

१२.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(जय प्रदाता)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
कैसा भी भय आ जाये,
महा भयंकर क्षण आये।
अगर राह भी भटकी हो,
साँस गले में अटकी हो॥
तो उनको क्या होगा डर,
णमोकार जिसके अंदर।
पद्मरुचि से मंत्र सुना,
बैल महा सुग्रीव बना॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

णं बीजाक्षर पूज के, आठों कर्म नशाएं।
नमोऽस्तु कर प्रभु सिद्ध को, अष्टम वसुधा पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं जय प्रदाता णं बीजाक्षर संयुक्त श्री सिद्ध परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

१३.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(दुश्मन विजय प्रदायक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
कैसा भी दुश्मन होवे,
जग जिसके आगे रोवे।
विश्व विजेता भले रहे,
जिसके रक्षित किले रहे॥
अस्त्र शस्त्र सेनायें हों,
हृदय विदारक आहें हों।
फिर भी विजय वही पायें,
णमोकार जो नित ध्यायें॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

ण बीजाक्षर ध्याय के, दुख के भ्रमण नशाएं।
नमोऽस्तु कर आचार्य को, चरण-शरण पा जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं दुश्मन विजय प्रदायक ण बीजाक्षर संयुक्त श्री आचार्य परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

१४.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(अग्निभय निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
आग भयंकर भभक रही,
लाल लाल सी धधक रही।
अंगारे भी उठते हों,
बचने के ना रस्ते हों॥
तो मत रोना-गाना रे,
णमोकार को ध्याना रे।
वो सीता रानी जैसी,
हो जायेगी पानी सी॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

मो बीजाक्षर ध्याय के, मोहासक्ति नशाएं।
नमोऽस्तु कर आचार्य को, मुनि अवस्था पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्निभय निवारक मो बीजाक्षर संयुक्त श्री आचार्य परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

१५.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(यश दायक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
जो इसका अपमान करे,
जग उसका अपमान करे।
दुर्गतियों का पात्र बने,
दुख दरिद्र का गात्र बने॥
सुभौम चक्री सम न बनो,
सादर इसकी विनय करो।
तो विशेष पद ये देगा,
अपयश हर यश दे देगा॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

आ बीजाक्षर ध्याय के, आदत बुरी नशाएं।
नमोऽस्तु कर आचार्य को, अपनी आतम ध्याएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं यशदायक आ बीजाक्षर संयुक्त श्री आचार्य परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

१६.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(विष निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
डसे जहर का जब कीड़ा,
बिच्छू साँप दे दुख पीड़ा।
बचने का ना हो रस्ता,
णमोकार पर रख श्रद्धा॥
पुत्र धनंजय के जैसे,
अनंगसरा बिटिया जैसे।
नव जीवन पा जाते हैं,
अमर तत्त्व अपनाते हैं॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

इ बीजाक्षर ध्याय के, ईश-धीश अपनाएं।
नमोऽस्तु कर आचार्य को, इष्ट अवस्था पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं विष निवारक इ बीजाक्षर संयुक्त श्री आचार्य परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

१७.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(रोग निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
तन में कोई रोग हुआ,
जिससे मन विक्षोभ हुआ।
आकुल व्याकुल क्यों होते,
क्यों उदास होकर रोते॥
णमोकार का जप करके,
दर्द विषल्या सम हर के।
स्वस्थ मस्त हो जाओगे,
शुद्धातम को पाओगे॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

रि बीजाक्षर ध्याय के, ऋषभ धर्म को पाएं।
नमोऽस्तु कर आचार्य को, वैर कषाय नशाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं रोग निवारक रि बीजाक्षर संयुक्त श्री आचार्य परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

१८.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(दृष्टि दोष निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
दृष्टि-दोष की हो बाधा,
जीवन भार लगे ज्यादा।
अंधकार हो मिथ्या का,
पता चले ना श्रद्धा का॥
तो भटको ना इधर-उधर,
णमोकार का खोजो घर।
पूज्यपाद गुरुवर सम हों,
सम्यग्दृष्टि आतम हों॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

या बीजाक्षर ध्याय के, याचक भाव न पाएं।
नमोऽस्तु कर आचार्य को, निज यमराज नशाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टि दोष निवारक या बीजाक्षर संयुक्त श्री आचार्य परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

१९.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(दुष्ट ग्रह भय निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
ग्रह भय पीड़ा से डरकर,
भाग रहे जो इधर-उधर।
णमोकार को छोड़ रहे,
धार्मिक नाता तोड़ रहे॥
ग्रह भय से मत डरना रे,
णमोकार बस पढ़ना रे।
भूत भगेंगे परिग्रह के,
रूप सजेंगे निज-गृह के॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

णं बीजाक्षर ध्याय के, मैत्री पथ अपनाएं।
नमोऽस्तु कर आचार्य को, सबको गले लगाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं दुष्ट ग्रह भय निवारक णं बीजाक्षर संयुक्त श्री आचार्य परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२०.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(काम-भोग नाशक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
काम भोग यदि सता रहा,
दुख का रस्ता बता रहा।
व्रत संयम हो खतरे में,
शील धर्म हो कचरे में॥
तो ऐसे में मत रमना,
णमोकार को बस जपना।
सुलोचना सम पावन हों,
समकित वाले सावन हों॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

ण बीजाक्षर ज्ञान कर, निज अज्ञान नशाएं।
नमोऽस्तु कर उपाध्याय को, सम्यग्ज्ञान सु पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं काम-भोग नाशक ण बीजाक्षर संयुक्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२१.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(शील-रक्षक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
बुरी नजर गर कोई रखे,
चीर हरण भी रुक न सके।
कोई नहीं बचैया हो,
दिखे न कृष्ण कन्हैया हो॥
तो लज्जा मत खोना रे,
चिंतित कभी न होना रे।
द्रोपदि जैसा ध्यान करो,
णमोकार सम्मान करो॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

मो बीजाक्षर ज्ञान कर, मोही मोह नशाएं।
नमोऽस्तु कर उपाध्याय को, आतम धन प्रकटाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं शील-रक्षक मो बीजाक्षर संयुक्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२२.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(दुख नाशक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
णमोकार का पा आश्रय,
राम गये श्री सिद्धालय।
णमोकार की अविनय कर,
रावण गया नरक के घर॥
नरक दुखों से अगर डरो,
तो रावण जैसा न करो।
अगर राम जैसे बनना,
णमोकार को बस भजना॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

उ बीजाक्षर ज्ञान कर, सब उपसर्ग नशाएं।
नमोऽस्तु कर उपाध्याय को, सुख की छाया पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं दुख नाशक उ बीजाक्षर संयुक्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२३.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(बंधन निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
अगर हरण सीता सम हो,
बंधक बना लिया तुमको।
भारी जेल यातना हो,
मन में बुरी कामना हो॥
कोई अपना दिखे नहीं,
साथ-सहारा मिले नहीं।
णमोकार जो जप बैठे,
मुक्त हों चंदनवाला से॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

वज्र बीजाक्षर ज्ञान कर, वज्र कर्म पिघलाएं।
नमोऽस्तु कर उपाध्याय को, चिदानंद रस पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं बंधन निवारक वज्र बीजाक्षर संयुक्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२४.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(पशु बंधन निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
अगर पालतू पशुओं का,
या जंगल के जीवों का।
कभी आक्रमण हो जाये,
क्षत-विक्षत तन हो जाये॥
तब तो ना चिल्लाना रे,
आँसू नहीं बहाना रे।
मुनिसुकुमाल सुकौशल सम,
णमोकार जप करो गमन॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

झा बीजाक्षर ज्ञान कर, जिनशासन झलकाएं।
नमोऽस्तु कर उपाध्याय को, पचरंगा फहराएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं पशु-बंधन निवारक झा बीजाक्षर संयुक्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२५.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(आधि-व्याधि निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
नाली में जब श्वान फँसा,
जिस पर सारा जगत हँसा।
दिखे न कोई कल्याणी,
तब तो जीवंधर स्वामी॥
णमोकार को पढ़कर के,
उसे सुनाया बढ़कर के।
उसने सुनकर प्राण तजे,
देव हुआ जिनराज भजे॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

या बीजाक्षर ज्ञान कर, यम का दैत्य नशाएं।
नमोऽस्तु कर उपाध्याय को, ज्ञान चेतना पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं आधि-व्याधि निवारक या बीजाक्षर संयुक्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२६.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(सर्पादि भय निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
तापस ने जब यज्ञ किये,
नाग-नागिनी जला दिये।
मरणासन्न समझ उनको,
पार्श्वकुमार ने फिर जिन को॥
णमोकार ज्यों सुना दिये,
त्यों सुख से वे मरण किये।
पद्मावती धरणेन्द्र बने,
पारस के उपसर्ग हने॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

णं बीजाक्षर ज्ञान कर, नाना पंथ नशाएं।
नमोऽस्तु कर उपाध्याय को, दिव्य देशना पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्पादि भय निवारक णं बीजाक्षर संयुक्त श्री उपाध्याय परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२७.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(अंतराय/संकट निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
जब अकलंक निकलंक के,
ऊपर संकट आये थे।
तब वे ना घबराये थे,
णमोकार को ध्याये थे॥
सो जीवन को धन्य किया,
जिनशासन में नाम किया।
हम भी ऐसा काम करें,
णमोकार जप ध्यान करें॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

ण बीजाक्षर पाठ कर, नाम अमर हो जाएं।
नमोऽस्तु कर मुनि साधु को, आत्म साधना पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं अंतराय-संकट निवारक ण बीजाक्षर संयुक्त श्री साधु परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२८.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(कष्ट/उपसर्ग निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥

सेठ सुदर्शन वैरागी,
जिन पर नारी थी रागी।
णमोकार से वे न हटे,
ब्रह्मचर्य पर रहे डटे॥
उनकी जय-जयकार हुई,
नारी धिक्-धिक्कार हुई।
णमोकार सो जपकर के,
सुखी रहें नारी तज के॥

णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

मो बीजाक्षर पाठ कर, मौन धरें निज ध्याएं।
नमोऽस्तु कर मुनि साधु को, मुक्ति रमा को पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं कष्ट-उपसर्ग निवारक मो बीजाक्षर संयुक्त श्री साधु परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

२९.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(नष्ट-वस्तु प्राप्तिकारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
नष्ट वस्तु की कर चिंता,
मकड़जाल मानव बुनता।
जिसमें खुद फँसकर पागल,
कर ना पाता निज मंगल॥
लेकिन णमोकार ध्या के,
नष्ट वस्तु अपनी पा के।
आतम पाने इच्छा हो,
नग्न दिगंबर दीक्षा हो॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

लो बीजाक्षर पाठ कर, लोक शिखर को ध्याएं।
नमोऽस्तु कर मुनि साधु को, लोक शिखर वस जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं नष्ट-वस्तु प्राप्तिकारक लो बीजाक्षर संयुक्त श्री साधु परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

३०.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(क्रोधादि कषाय शांतिकारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
अगर क्रोध की ज्वाला हो,
वैर बढ़ाने वाला हो।
खुद का घर का घाती हो,
कषाय सत्यानाशी हो॥
तो प्रतिकार नहीं करना,
णमोकार को बस पढ़ना।
क्रोध शांत जल्दी होगा,
नहीं महाभारत होगा॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

ए बीजाक्षर पाठ कर, एश्वर्य झलकाएं।
नमोऽस्तु कर मुनि साधु को, णमोकार हो जाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादि कषाय शांतिकारक ए बीजाक्षर संयुक्त श्री साधु परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

३१.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(पाप निवारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
हिंसा असत्य चोरी के,
कुशील परिग्रह जोड़ी के।
पाप-व्यसन के नृत्य रहे,
बचते केवल भक्त रहे॥
णमोकार जप दीक्षा लें,
पिछी कमण्डल शिक्षा लें।
डँवाडोलता त्यागो रे,
अंजन जैसे जागो रे॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

स० बीजाक्षर पाठ कर, सर्व पूज्य पद पाएं।
नमोऽस्तु कर मुनि साधु को, जिन सर्वज्ञ कहाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं पाप निवारक स० बीजाक्षर संयुक्त श्री साधु परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

३२.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(पुण्य प्रदाता)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
पुण्य भक्त का ध्येय नहीं,
उपादेय है हेय नहीं।
'पुण्यफला' अरिहंता हो,
बनते सिद्ध महंता हो॥
अतः पुण्य को मत छोड़ो,
पुण्य क्रिया से मन जोड़ो।
णमोकार साधन जिसका,
साध्य सिद्ध होता उसका॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

व बीजाक्षर पाठ कर, वैरागी हो जाएं।
नमोऽस्तु कर मुनि साधु को, अपना राग नशाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्य प्रदाता व बीजाक्षर संयुक्त श्री साधु परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

३३.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(पूर्ण सुरक्षा कारक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
जिसकी कहीं न रक्षा हो,
पल-पल जन्म अरक्षा हो।
पीछे कर्मोदय दौड़ें,
अपने भी तो ना छोड़ें॥
यहाँ-वहाँ मत जाना रे,
मात्र जिनालय आना रे।
पूर्ण सुरक्षा पाओगे,
णमोकार ज्यों ध्याओगे॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

सा बीजाक्षर पाठ कर, साध्य सिद्ध हो जाएं।
नमोऽस्तु कर मुनि साधु को, शुद्धातम झलकाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्ण सुरक्षाकारक सा बीजाक्षर संयुक्त श्री साधु परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

३४.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(ज्ञान प्रदायक)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
ज्ञानावरण आदि आठों,
कर्म कुठार कहाँ काटो।
कर्मोपद्रव टलें नहीं,
समाधान कुछ मिले नहीं॥
णमोकार की कर सेवा,
यथाजात हो स्वयमेवा।
कर्माष्टक नश जायेंगे,
स्वर्ग मोक्ष सुख पायेंगे॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

हू बीजाक्षर पाठ कर, हाय! हाय! नश जाएं।
नमोऽस्तु कर मुनि साधु को, अर्हं अर्हं ध्याएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान प्रदायक हू बीजाक्षर संयुक्त श्री साधु परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

३५.

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।

(सर्वोच्च पद प्रदाता)

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥
नष्ट भ्रष्ट कर्मों को कर,
सिद्धों सम अपने को कर।
भव संसार नशाना है,
वीतरागता पाना है॥
इसका साधन एक रहा,
णमोकार ही श्रेष्ठ रहा।
अतः इसी की शरण रहो,
पठन-पाठ कर मगन रहो॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

णं बीजाक्षर पाठ कर, भव के चक्र नशाएं।
नमोऽस्तु कर मुनि साधु को, वीतरागता पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोच्च पद प्रदाता णं बीजाक्षर संयुक्त श्री साधु परमेष्ठिने दीपं-प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीपं-प्रज्ज्वलन करें)

उपसंहार

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।
ऐसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं॥
चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं केवलि पण्णत्तं धम्मं मंगलं।
चत्तारि लोगोत्तमा अरिहंता लोगोत्तमा सिद्धा लोगोत्तमा
साहू लोगोत्तमा केवलि पण्णत्तं धम्मं लोगोत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं
पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं
पव्वज्जामि केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं
पव्वज्जामि।

णमोकार के पाँच पदों के, पैंतीस अक्षर गाते हैं।
जिनशासन में परमेष्ठी को, सादर शीश झुकाते हैं॥

णमोकार की यह महिमा,
क्या समझेंगे हम गरिमा।
पर इतना तो पक्का है,
णमोकार ही सच्चा है॥
मंगल-मंगल प्रथम यही,
उत्तम-उत्तम धरम यही।
सब शरणों की शरण यही,

णमोकार है धर्म यही॥
नमस्कार यह मत्र रहा,
सब पापों को हंत रहा।
जग में जितने भी मंगल,
उनमें पहला है मंगल॥
ऐसे जैसे हो कैसे,
शुद्धाशुद्ध जहाँ जैसे।
णमोकार का ध्यान करो,
'सुव्रत' निज कल्याण करो॥
णमोकार की इस गाथा से, जीवन धन्य बनाते हैं।
पूज्य पंच परमेष्ठी प्रभु को, करके नमोऽस्तु ध्याते हैं॥

(दोहा)

णमो णमो के मंत्र से, णमोकार को ध्याएं।
जिनशासन की छाँव में, 'सुव्रत' आतम पाएं॥

जाप्य मंत्र—ओम् ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

अथ णमोकार दीप-महा-अर्चना बेलायां कायोत्सर्गं करोमि। (यहाँ कायोत्सर्ग करें) (उसके बाद आरती करके णमोकार महिमा का पाठ करें)।

===

णमोकार महिमा

श्री णमोकार का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी।

१. यह महामंत्र कहलाता है, यह श्रेष्ठ महापद दाता है
है जनक सभी मंत्रों का ज्ञानी-ध्यानी। हो मंगलमय...

२. अरिहंत सिद्ध आचार्य यहाँ, गुरु उपाध्याय मुनि साधु महा।
ये णमोकार के पाँच पदों के स्वामी। हो मंगलमय...

३. यह मंगल उत्तम शरण रहा, आतम का चरणाचरण रहा।
यह पाप हरे दे स्वर्ग मोक्ष राजधानी। हो मंगलमय...

४. जो णमोकार का आश्रय लें, वे होकर सफल विजय पा लें।
दुनियाँ में उनको रहे नहीं परेशानी। हो मंगलमय...

५. चाहे सती अंजना सीता हों, चाहे चंदनवाला सोमा हो।
कल्याण सभी का हुआ हुआ वरदानी। हो मंगलमय...

६. चाहे अंजन तस्कर ग्वाला हो, चाहे श्रद्धालु चांडाला हो।
इसकी श्रद्धा से पाये अमर निशानी। हो मंगलमय...

७. अब और कहें क्या हम ज्यादा, यह दूर करे हर इक बाधा।
कर अनुष्ठान से बदले भक्त कहानी। हो मंगलमय...

८. दिन-रात इसी का चिंतन हो, हर श्वांस प्राण धड़कन में हो।
तो 'सुव्रत' पायें जल्दी मुक्तिरानी। हो मंगलमय...

===

आरती-१

ओम् जय णमोकार प्रभु, स्वामी जय णमोकार प्रभु।
पूज्य पंच परमेष्ठी, सुख के द्वार प्रभु॥ ओम् जय...

१. पाँच पदों का धारी, पैंतीस अक्षर का-स्वामी...
अट्ठावन मात्रायें, साधन शिवपुर का॥ ओम् जय...

२. अरिहंत सिद्ध आचारज, उपाध्याय साधु-स्वामी...
ये पाँचों परमेष्ठी, करते हैं जादु॥ ओम् जय...

३. पाप बुराई हर्त्ता, कर्म कलंक हरे-स्वामी...
खुद में शामिल करके, सिद्ध समान करे॥ ओम् जय..

४. णमोकार की आरती, धर्म सारथी है-स्वामी...
'सुव्रत' की सुन अर्चा, शीघ्र तारती है॥ ओम् जय...

===

टिमटिमाते
दीप को भी पीठ दे
भागती रात

आरती-२

श्री णमोकार की आरती उतारो मिलके।
पाँचों परमेष्ठी जी को पूजो मिलके॥

१. श्री अरिहंत सिद्ध आचारज, उपाध्याय साधु।
पूज्य पंच परमेष्ठी स्वामी, आतम के स्वादु॥
संसारी के रहे सहारे, करते है जादु।
अपने भक्तों को ये करते, जल्दी से साधु॥ श्री...

२. सब मंत्रों का मूल मंत्र ये, मंगल है पहला।
उत्तम शरण इसी की पा के, जीवन हो उजला॥
विघ्न अमंगल अष्ट दूरकर, सबका करे भला।
इसमें शामिल होना जग की, सबसे बड़री कला॥ श्री.

३. णमोकार से यही प्रार्थना, हम सब भक्तों की।
श्वांस-श्वांस धड़कन-धड़कन में, गूँज हो मंत्रों की॥
णमोकार मय करें समाधि, पिछी कमण्डल लें।
णमोकायमय 'सुव्रत' होना, जन्म धन्य कर लें॥ श्री..

===

गुरु ने मुझे
प्रकट कर दिया
दीया दे दिया